International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences
Volume – 7 Issue – 2, July- December 2019 (Special Issue)
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

अहिंसा के संदर्भ में गांधी जी के विचार

कुलदीप सिंह

यू. जी सी नेट असिस्टेंट प्रोफेसर डिपार्टमेंट ऑफ़ हिस्ट्री आर बी एस डिग्री कॉलेज नारनौल

सारांष

अहिंसा से तात्पर्य –शाब्दिक रूप से अहिंसा अ+हिंसा से मिलकर बनता है। अतः अहिंसा का सामन्य अर्थ है – जो हिंसा न हो। इस प्रकार से किसी की हत्या न करना या किसी अन्य प्राणी किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुंचाना ही अहिंसा है। व्यापक अर्थ में अहिंसा को किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म, वचन और वाणी से नुकसान नहीं पहुंचाने के अर्थ में देखा जाता है। मन में किसी का अहित न सोचना, किसी को कटुवाणी से नुकसान न पहुंचाना और कर्म से भी किसी प्राणी की हिंसा न करना ही अहिंसा है। यह कोई नया शब्द नहीं है। मनुस्मृति व अपनिषदों के अनुसार अहिंसा का अर्थ सामान्यतः किसी प्राणी को कष्ट नहीं पहुंचाना या किसी का प्राण नहीं लेना है।

संकेत शब्द– अहिंसा, मनुस्मृति, उपनिषद, मध्यम मार्ग, प्रतिपादित, सुसंस्कृत, शाश्वत, आदिकाल, निश्चयात्मक, ईथर, पूर्वाधार, आध्यात्मिक, अधिष्ठान, प्रभुसत्तात्मक, अपरिग्रह, परिज्ञान, परिष्कृत।

गांधी जी व अहिंसा

अहिंसा के संबंध में गांधी जी ने मध्यम मार्ग का अनुसरण किया। अहिंसा के संबंध में उनका विचार एक ओर जैन मत की अतिवादी और कठोर अहिंसा है तो दूसरी ओर मनु द्वारा प्रतिपादित कुछ अधिक लचीली। उनके अनुसार मनुष्य प्राकृतिक रूप से अहिंसा प्रिय है। विपरीत परिस्थितियों के कारण ही मनुष्य हिंसक रूप धारण करता है। मनुष्य आदिकाल से ही नरभक्षी रहा है। परन्तु धीरे–धीरे वह सुसंस्कृत व सभ्य बना और मानव में अहिंसक प्रवृति का विकास हुआ अहिंसा समस्त जीवों का शाश्वत नियम है। अहिंसा समस्त शक्तियों से अधिक शक्तिशाली है। अहिंसा में कठोर से कठोर दृश्य को पिघलाने की शक्ति है। यह विद्युत से अधिक निश्चयात्मक और ईश्वर से भी अधिक शक्तिशाली है।

गांधी जी मानव समाज पर अत्याचार करने वालों एवं अन्य विरोधी ताकतों को बलपूर्वक समाप्त कर देने को उचित नहीं मानते। उनके अनुसार बुरे से बुरे व्यक्ति को भी अहिंसा के माध्यम से सुधारा जा सकता है। अहिंसा से भिप्राय अन्याय व अत्याचार का शांतिपूर्ण तरीके से विरोध करना है। पहले अहिंसा का प्रयोग व्यक्तिगत साधना तथा राजनीति के लिए किया जाता था, परन्तु गांधी जी ने ही सर्वप्रथम इसे

समाज की साधना का अंग बना दिया। उन्होनें कहा कि, अहिंसा सभी धर्मो का पूर्वाधार है। गांधी जी के अनुसार अहिंसा केवल व्यक्तिगत सद्‌गुण ही नहीं है, अपितु यह एक सामाजिक सद्‌गुण भी है। समाज का नियमन लोगों के आपसी व्यवहार में अहिंसा के प्रकट होने से होता है।

अहिंसा के स्वरूप

गाँधी जी के अनुसार अहिंसा सर्वोच्च, नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति की प्रतीक है। व्यवहार के धरातल पर अहिंसा निम्न रूपों में अभिव्यक्त होती है :–

व्यावहारिक अहिंसा –

अहिंसा के इस रूप को जीवन के किसी भी क्षेत्र में विशेष आवश्यकतानुसार एक नीति के रूप में स्वीकार किया जाता है। यह निर्बल एवं असहाय व्यक्तियों से संबंध रखती है। ऐसे व्यक्ति अहिंसा को नैतिक विश्वास एवं श्रृद्धा के कारण स्वीकार नहीं करते, अपितृ वे अपनी दुर्बलता के कारण ही हिंसा का प्रयोग नहीं कर पाते। यद्यपि यह अहिंसा दुर्बल व्यक्तियों की है, पर यदि इसका पालन ईमानदारी व दृढ़ता के साथ किया जाए तो यह पर्याप्त शक्तिशाली और लाभदाय सिद्ध हो सकती है। गाँधी जी ने इस प्रकार की अहिंसा को निष्क्रिय प्रतिरोध कहा है।

जाग्रत अहिंसा –

यह अहिंसा का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप है। इसे व्यक्ति अपने आंतरिक विचारों की उत्कृष्टता तथा नैतिकता के कारण स्वीकार करता है। इस अहिंसा का प्रयोग साधन संपन्न और बहादुर व्यक्ति लाचारी, विवशता के कारण नहीं, अपितृ नैतिक मूल्यों में दृढ़ आस्था के कारण करते है। अतः यह वीरों या बहादुरों की अहिंसा है। इस अहिंसा में आवश्यकता या नीति इतनी महत्वपूर्ण नहीं होती जितना आंतरिक विश्वास। यह अहिंसा जीवन के सभी क्षत्रों में लागू हो सकती है।

कायरों की अहिंसा –

यह अहिंसा का सबसे निम्न रूप है। यह अहिंसा भय या डर पर आधारित है। कायर व्यक्ति अहिंसा का दम इसलिए भरता है क्योंकि वह कायर है। वह परिस्थितियों का सामना करने की अपेक्षा भाग खड़ा होता है। गाँधी जी कायरता के बिल्कुल भी पक्ष में नहींथे। यदि कायरता और हिंसा में से किसी एक को चुनना हो तो कायरता की बजाय हिंसा का चुनाव ठीक है। गाँधी जी ने इसे निष्क्रिय अहिंसा की संज्ञा दी है।

गाँधी जी की अहिंसा का व्यावहारिक दृष्टिकोण

गाँधी जी बचपन से ही जैन मत से प्रभावित थे, परन्तु उन्होनें कभी जैन अतिवाद को स्वीकार नहीं किया। गाँधी जी स्वयं अपने को व्यावहारिक आदर्शवादी कहते थे, इसलिए गाँधी जी की अहिंसा के प्रति कल्पना काफी लचीली है।

गाँधी जी के अनुसार, ''मेरी अहिंसा अपने ढंग की है। मैं जानवरों को न मारने का सिद्धान्त पूरी तरह स्वीकार नहीं कर सकता। जो पशु मनुष्य को खा जाते है या नुकसान पहुँचाते है, उनकी जान बचाने की मुझमें कोई भावना नहीं है। उनकी वंशवृद्धि में सहायक होना मैं अनुचित मानता हूं।'' अपनी आत्मकथा में उन्होनें स्पष्ट किया है कि, ''पूर्ण अहिंसा में विश्वास करने वाले व्यक्ति के लिए व्यावहारिक जीवन भी धर्म संकट है। ज्ञात और अज्ञात रूप से स्थूल हिंसा किए बिना मनुष्य एक क्षण भी जी नहीं सकता, चाहे वह हमारा भोजन हो या जलग्रहण या हमारा चलना–फिरनी। इन सब में कुछ न कुछ हिंसा होती ही है।''

अहिंसा का अधिष्ठान हमारा अन्तः स्थल होना चाहिए। इसके मूल में प्रेम और करूणा है। हिंसा का जन्म कायरता से होता है जबकि, अहिंसा हिम्मत से पैदा होती है। गाँधी जी ने तो यहाँ तक कहा है कि, ''जहाँ केवल कायरता और हिंसा के बीच ही चुनाव करना हो वहाँ मैं हिंसा के चुनाव की सलाह दूँगा।''

अहिंसा की आवश्यकताएं

सत्य–सत्य अहिंसा का मूल तत्व है। गाँधी जी के शब्दों में, ''सत्य एक ऐसा प्रभुसत्तात्मक सिद्धान्त है जिसमें कई अन्य सिद्धान्त सम्मलित है। यह सत्य मात्र शब्दों की ही सत्यता नहीं है, किन्तु विचारों की भी और इसके अतिरिक्त वह न केवल हमारे परिज्ञान की अपेक्षा में सत्य हों, वरन् सम्पूर्ण सत्य जो कि 'ईश्वर' है।''

आन्तरिक शुद्धता

अहिंसा में सच्चा विश्वास रखने वाले व्यक्ति से यह आशा भी की जाती है कि वह आन्तरिक शुद्धता का भी पालन करें। गाँधी जी के शब्दों में, ''ब्रह्मचर्य सबसे बड़ै अनुशासनों में से एक ऐसा अनुशासन है जिसके बिना मन में पूरी दृढ़ता नहीं आती।''

अपरिग्रह

अपरिग्रह का सिद्धान्त विचारों पर भी उतना ही लागू हो सकता है जितना वस्तुओं पर। ऐसे विचार जो हमें ईष्वर की ओर प्रवृत्त नहीं करते या हमें ईष्वर से दूर ले जाते हैं, हमारे मार्ग में बाधाएं बनते है।

मनुष्य मात्र के अन्दर अपरिग्रह की प्रवृति की रिक्तता उसकी भौतिक इच्छाओं की वृद्धि करती है जो हिंसा का कारण बनती है।

उपवास

उपवास आन्तरिक शुद्धता का साधन है तथा एक राष्ट्रीय आन्दोलन में राष्ट्रीय पश्चाताप का साधन है। गाँधी जी के अनुसार एक विशुद्ध उपवास शरीर, मन तथा आत्मा को भी शुद्ध कर देता है। एक पूर्ण उपवास पूर्ण आत्म त्याग भी है। यह एक अहिंसक सैनिक का सशक्त हथियार है।

निर्भीकता

गाँधी जी ने कहा था एक मात्र आश्वासन व्यक्तियों के निजी साहस में ढूँढना चाहिए। शेष सभी उस पर ही निर्भर करता है। अहिंसा का अर्थ है पूर्ण निर्भीकता। अहिंसा के लिए युद्ध के सैनिक से भी बड़े साहस की अपेक्षा होती है।

गाँधीवादी अहिंसा के लक्षण

अहिंसा धनात्मक है –

गाँधी जी की हिंसा धनात्मक है क्योंकि एक संगठित अहिंसा से समाज परिष्कृत होता है। गाँधी जी के अनुसार युद्ध को रोका जा सकता है और मानव संस्कृति को सभ्य बनाया जा सकता है।

अहिंसा कायरता नहीं है –

गाँधी जी के अनुसार, ''मेरा अहिंसा धर्म एक अत्यन्त सक्रिय बल है। इसमें कायरता या दुर्बलता की गुंजाइश नहीं है। किसी हिंसक मनुष्य के किसी दिन अहिंसक बन जाने की आशा होसकती है, मगर कमजोर दिल वाले के लिए ऐसी कोई आशा नहीं होती।''

अहंसा एवं प्रेम –

गाँधी जी का ये विश्वास है कि समुचे विश्व का संचालन प्रेम के माध्यम से ही होता है। प्रेम अहिंसा की प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करता है। प्रेम ही जीवन तथा घृणा हमें विनाश की ओर अग्रसर करती है।

अहिंसा एक विज्ञान के रूप में –

विज्ञान के शब्दकोश में 'असफलता' का कोई स्थान नहीं होता। गाँधी जी के अनुसार अहिंसा भी एक विज्ञान है। कोई भी व्यक्ति अहिंसा के वातावरण में अपनी अहिंसा की परख नहीं कर सकता। अहिंसा की परख केवल हिंसा के वातावरण में ही की जा सकती है।

निष्कर्ष

गाँधी जी ने हर प्रकार की हिंसा की निन्दा की है। उनके अनुसार अहिंसा व्यक्ति को दृढ़ व शक्तिशाली बनाती है। अहिंसा संसार के उन महान् सिद्धान्तों में से है जिसे दुनिया की कोई ताकत मिटा नहीं सकती। उनके अनुसार, ''अहिंसा की सच्चाई प्रमाणित करने के प्रयास में मेरे जैसे हजारों लोग मर जाये, पर अहिंसा कभी नहीं मरेगी।'' गाँधी जी का विश्वास था कि, यदि आपके पास अहिंसा की तलवार हो तो दुनिया की कोई शक्ति आपको अपनी अधीनता में नहीं ले सकती। यह विजेता और विजित, दोनों का उदातीकरण करती है। इस समय सम्पूर्ण विश्व में जोहिंसा की लहर आई हुई है, गाँधी जी के अनुसार, ''उसका यही कारण हैकि अभी तक वीर पुरूष अपराजय अहिंसा की तकनीक को पूरी तरह खोजा नहीं गया है।''

सन्दर्भः

- शर्मा प्रकाश ओम ''वर्तमान विश्व राजनीति में गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता'', कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान) 2015
- दत धीरेन्द्र मोहन, ''महात्मा गाँधी का दर्शन'', बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1973, पृष्ठ 69
- सिंह रामजी, ''गाँधी दर्शन मीमांसा'', बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1973, पृष्ठ 80
- बहरवाल मनोज कुमार, ''भारतीय राजनीति चिन्तक'', हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, 2014, पृष्ठ 394
- जैन माणक, ''गाँधी जी के विचारों की 21वीं सदी में प्रासंगिकता'', आदि पब्लिकेशन, जयपुर, 2010, पृष्ठ 4
- आढ़ा डॉ. आर.एस., ''हमारे युग प्रवर्तक महापुरूष'', शिव बुक डिपो, जयपुर, पृष्ठ 115
- यंग इंडिया, सितम्बर 16, 1926

  हरिजन, मई 5, 1946
- यंग इंडिया, अगस्त 10, 1927
- प्रधान आर.के. राव यू. आर., ''द माइंड ऑफ महात्मा कॉम्पाइल्ड'', 1945, पृष्ठ 228
- यंग इंडिया, दिसम्बर 18, 1924
- गुगल, विकिपिडिया
- त्यागी पी.के., भारतीय राजनीतिक विचारक'', विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ 392
- हरिजन, मई 13, 1939, पृष्ठ 121